IN SUCCESS IMPORTANCE OF PERSONALITY DEVELOPMENT OF A CHILD

सफलता में बच्चे के व्यक्तित्व विकास का महत्त्व

बच्चों को अनाथ नहीं करें स्वयं के अधीन पढ़ायें..... पृष्ठ 25

सुपर किड क्या है..... पृष्ठ 50

सारा–कुछ बच्चों का ही तो है..... पृष्ठ 33

दो तरह की शिक्षा पृष्ठ 65

हीनता को मिटायें कैसे ? पृष्ठ 40

बच्चों में चरित्र....रिले रेस नहीं हैं..... पृष्ठ 78

IN SUCCESS

IMPORTANCE OF PERSONALITY DEVELOPMENT OF A CHILD

सफलता में

बच्चे के व्यक्तित्व विकास का महत्त्व

जब बच्चा पैदा होता है तो
वह कोरा कागज होता है।

—राम बजाज

*

बच्चा, माँ-बाप की कार्बन कॉपी होता है।
जैसा आपका व्यवहार – वैसा ही बच्चे का।

—राम बजाज

बच्चे राष्ट्र, समाज व परिवार का भविष्य होते हैं। इस भविष्य की आधारशिला (foundation) वर्तमान में ही रखी जाती है। जिसका पूरा जिम्मा उसके माता-पिता, शिक्षक व शिक्षा तथा माहौल का होता है। बच्चों के व्यक्तित्व के विकास (Personality development) में जो घटक (Elements) काम करते हैं---उनकी जानकारी के बिना व्यक्तित्व का विकास संभव ही नहीं है। पारिवारिक माहौल द्वारा, बच्चों की क्षमताओं का विकास, प्रतिभा निखारने के अवसर, प्रोत्साहन व्यवहार, आदतें, संगत ऐसे घटक हैं जिनसे बच्चों के व्यक्तित्व के विकास को नई दिशा दी जा सकती है। बशर्ते कि इन बातों की जानकारी माँ-बाप को हो अन्यथा उनके भविष्य का बेड़ा गर्क ही होगा।

माता-पिता की भूमिका बच्चों के व्यक्तित्व विकास में कुम्हार के समान होती है। शुरू में जिसकी पूर्ण जिम्मेदारी माँ-बाप की रहती है। जिस प्रकार कुम्हार कच्चे घड़े को ठोंक-ठोंक कर दोष निकालता है, लेकिन चोट मारते समय अन्दर अपने हाथ का सहारा दिए रहता है। बस कुछ ऐसी ही सोच अभिभावकों, शिक्षकों और समाज सुधारकों की होनी चाहिए जो कि आज के समाज व माहौल में कहीं दिखाई नहीं देती है। वास्तव में देखा जाए तो बच्चों में पड़े हुए अच्छे संस्कार ही उन्हें उत्तम नागरिक होने का गौरव दिलाते हैं। व्यावहारिक जीवन में छोटी-छोटी बातें ही उनकी कामयाबी का आधार बनती हैं, और वे व्यक्तित्व को प्रभावी बनाती हैं।

जीवन की कामयाबी एक अच्छा मनुष्य बनने और सद्गुणों को अपनाकर व्यक्तित्व विकास करने में है—किसी ऊँचे पद या अधिकार को हासिल कर लेना ही नहीं है। आप अपने बच्चे को निर्धन तो नहीं चाहते हैं परन्तु क्या यह चाहते हैं कि वह एक धनवान पशु हो ? सावधान ! यदि आप ऐसा चाहते हैं, तो पहले शिकार आप ही होंगे। उसकी पशुता की सर्वाधिक यातनाएँ पहले आपको ही भोगनी पड़ेंगी, और उसके बाद नम्बर आयेगा समाज का।

व्यक्तित्व विकास का घटक नं. 1 – नैतिकता
Element of Personality Development No. 1 - Morality

बालक अल्बर्ट जब सुबह उठा तो उसके गार्डन के पेड़ पर तोते के छोटे बच्चे की आवाज सुनाई दी। तोता अभी बच्चा ही था। अल्बर्ट यह देखकर खुशी से फूला नहीं समा रहा था। उसने तोते को पकड़कर पिंजरे में बन्द कर दिया। तोते को पकड़े जाने पर अल्बर्ट खुशी से झूम रहा था, पर तोता पिंजरे में फड़फड़ा रहा था—आजादी पाने की आस में। दो दिन तक तोते ने खाना नहीं खाया। मरता क्या नहीं करता? तोता, जिसका नाम 'टोनी' रखा, ने हालात से समझौता कर लिया। बालक अल्बर्ट ने अब टोनी को दोस्त बना लिया और रोज ढेर-सारी बातें करना भी सिखा दिया। टोनी बेबस कैदी की तरह अल्बर्ट से भी ढेर-सारी बातें करता।

एक दिन बालक अल्बर्ट जब स्कूल की लाइब्रेरी में पढ़ने में मग्न था, लाइब्रेरी का समय समाप्त हो जाने के कारण चौकीदार ने उसे गलती से, बिना जानकारी होने के कारण लाइब्रेरी में बन्द कर दिया। रात-भर अल्बर्ट लाइब्रेरी में पड़ा-पड़ा बेचैन रहा। उसके माँ-बाप अल्बर्ट को ढूँढ़ते रहे। जब सुबह स्कूल खुला तो चौकीदार को गलती का एहसास हुआ। अल्बर्ट को एक रात की कैद की भयानकता का एहसास हो चुका था। इस छोटी-सी घटना से उसकी आँखें खुल गईं।

अल्बर्ट तुरन्त अपने घर पर दौड़ता हुआ पिंजरे के पास गया और टोनी तोते को हाथ में लेकर कहा, 'मेरे दोस्त, मुझे कैद की भयानकता का पता चल गया है, आज से तुम आजाद हो, मुझे माफ कर देना।'

नैतिकता की इस शिक्षा का संस्कार उसको एक छोटी-सी गलती से हासिल हुआ और यह शिक्षा मि. अल्बर्ट को पूरी उम्र में काम आती रही। मि. अल्बर्ट ने बच्चा होते हुए भी अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनी और अपने छोटे-से जीवन में मूल्यों को दुबारा देखा और उनमें सुधार किया।

बच्चे के व्यक्तित्व विकास का घटक नं. 2
Element of Personality Development No. 2

थोड़ा-थोड़ा फर्क जुड़कर बहुत बड़ा फर्क बन जाता है
Small little things make a very big difference

भगवान बुद्ध एक बार तालाब के किनारे जा रहे थे तो उन्होंने एक गिलहरी को तालाब से बार-बार अन्दर-बाहर जाते हुए देखा। भगवान बुद्ध ने उस गिलहरी से पूछा, 'बहन क्या कर रही हो?'

गिलहरी ने उत्तर दिया, 'मैं इस तालाब के पानी को बाहर निकाल कर इसे खाली कर रही हूँ। इसने मेरे भाई की जान ली है।'

भगवान बुद्ध ने दुबारा पूछा, 'कितना पानी बाहर निकाल पाओगी? इस तरह से तो इस तालाब पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।'

गिलहरी ने कोई जवाब नहीं दिया। एक बार फिर तालाब में घुसकर फिर पानी को अपने मुँह में लेकर बाहर फेंक दिया और बोली, 'इससे कम-से-कम इस तालाब में एक बूँद तो कम हुई।'

बड़ा या छोटा फर्क एक आदमी लाता है तो कोई बड़ी बात नहीं है। अगर सब लोग थोड़ा-थोड़ा फर्क लायें तो बहुत बड़ा अन्तर व फर्क हमारे जीवन में आ जाता है और यही बहुत बड़ा फर्क बन जाता है। कई बार हम उन चीजों की अनदेखी कर देते हैं जिनकी अनदेखी नहीं करनी चाहिए, और जिन चीजों की अनदेखी कर देनी चाहिए उनकी हम करते ही नहीं है—बल्कि उनको जीवन में ग्रहण कर लेते हैं।

दुनिया को आप क्या दे रहे हैं? आपका योगदान क्या है? यह आप और हम सब के सोचने और समझने का समय है।